International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 9, September 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संत काव्य में संत कवियों का समान्वयवादी दृष्टिकोण

डॉ0 दीपा कन्नौजिया
सहायक आचार्य
महात्मा गांधी बालिका विद्यालय पी0जी0 कालेज फिरोजाबाद (उ0प्र0)

सारांश –

संत साहित्य जन–जीवन का साहित्य है। संत लोकधर्म के संस्थापक एवं प्रतिष्ठापक थे, फलस्वरूप तत्कालीन समाज में प्रचलित विभिन्न धार्मिक मतों, सम्प्रदायों, के भीतर व्याप्त विभिन्न कर्मकाण्डों, वाह्याडम्बरों का खण्डन कर एक सर्वमान्य मत की प्रतिष्ठा करने की चेष्टा की थी। समाज में फैले संकुचित आचार–विचार तथा रूढ़िगत दुराग्रहों से ऊपर उठ कर संतों ने विशुद्ध मानवीय प्रेम की आधारशिला प्रतिष्ठित करने की कोशिश की थी। यही मानवीय प्रेम, जब समाज में स्थापित हो जाता है तब साम्प्रदायिक सद्भाव और भाईचारा स्थापित होता है। संत साहित्यकिस स्तर तक भारतीय समाज में सद्भाव और एकता बनाये रखने में कार्य किया है और आधुनिक परिवेश में संतों को प्रासंगिकता क्या है? यह विचारणीय प्रश्न है। आज देश में चारों ओर अशांति हिसा लूटपाट, आतंकवाद, आर्थिक घोटाला आदि का बोलबाला है। इसके मूल कारण की ओर जब हमारा ध्यान जाता है, तब यह स्पष्ट हो जाता है कि आज का समाज भौतिकतावादी होने के कारण अपनी अनन्त इच्छाओं को पूरा नहीं कर पा रहा है और इस असफलता के कारण उसमें असंतोष की भावना प्रबल हो उठी है। कुछ इसी प्रकार की परिस्थितियाँ संतों के समय भी थीं। एक ओर समाज का सर्वहारा वर्ग उपेक्षित था, उसे सामाजिक स्तर पर घृणा की दृष्टि से देखा जाता था कड़ी महनत के बाद भी उसे भर पेट भोजन नहीं मिल पाता था, दूसरी ओर शोषक वर्ग दूसरों की कमाई पर आनन्दपूर्वक बिना किसी रोक–टोक के जीवन जी रहा था।

मुख्य शब्द–आधुनिक परिवेश,संत साहित्य,मानवीय प्रेम,भौतिकतावादी, आतंकवाद

****

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 9, September 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

धार्मिक और राजनीतिक दृष्टि से तो सर्वहारा को कोई स्थान ही नहीं मिला था। धर्म के नाम पर भोली–भाली जनता को अंधविश्वास और वाह्याडंबर की काली कोठरी में ढकेल दिया गया था इसलिए असंतोष की लहर चारों ओर चल रही थी। हिन्दुओं में बहुदेववाद, विभिन्न धार्मिक मतों के कारण समाज संगठित नहीं हो पा रहा था। वाह्याडंबरों के भंवरजाल में आम जनता को भटकाया जा रहा था। दूसरी ओर इस्लाम धर्म और हिन्दू धर्म में परस्पर विरोध की भावना तीव्र गति से बढ़ती जा रही थी। एक दूसरे के धर्म से अपने धर्म को श्रेष्ठ मानने की भावना प्रबल थी। इस विषमता को संतों ने देखा और अनुभव किया था। इस मतभेद को दूर करने का प्रयास संतों ने बड़ी तन्मयता के साथ किया। डॉ0 विजयेन्द्र स्नातक ने लिखा है कि ''निर्गुण संतों की साधना समन्वयमूलक थी। धर्म, दर्शन, उपासना, आचार और विचार सबमें समन्वय द्वारा ये संत ऐसे मार्ग का सन्धान करते रहे जो मानव मात्र के लिए कल्याणकारी होने के साथ स्वीकार्य हो सके। कबीर, नानक, दादू आदि सन्त मानवतावादी दृष्टि सम्पन्न महात्मा थे। इनकी दृष्टि में हिन्दू–मुसलमान का भेद नहीं था। इन्होंने मनुष्य–मनुष्य के बीच जाति, वर्ग, धर्म, सम्प्रदाय की कोई दीवार खड़ी नहीं की। जिस सर्व–धर्म समभाव की बात आज बड़े उत्साह से की जाती है, वह इन सन्तों ने आज से लगभग आठ सौ वर्ष पहले आग्रह और विचारपूर्वक कही थी। यही कारण है कि दर्शन के क्षेत्र में शंकर अद्वैत को इन्होंने स्वीकार किया। नाथ और सिद्धों की वाणी में भी उन तत्वों को स्थान नहीं मिला जो किसी संकीर्णमतवाद या विचारधारा से बँधे थे। संतों की मानवतावादी दृष्टि के मूल में स्वतंत्र चिंतन, स्वानुभव और आचरित सत्य ही प्रमुख थे आस्तिकता, सच्चरित्रता, परदुःख कातरता, करुणा, प्रेम, भक्ति और विनय उनके आदर्श थे। प्रायः सभी संत सद्गृहस्थ थे, किन्तु स्वकीय परिवार के भरण–पोषण की सीमा में इन्होंने अपना मानवीय दृष्टिकोण संकीर्ण नहीं बनाया था।''[1] वास्तविकता यह थी कि इन संतों ने शास्त्र और सम्प्रदाय की बंधी हुयी सीमा को तोड़कर व्यक्ति–साधना के साथ समष्टि–हित में प्रयोजनीय बनाया। यही कारण है कि संतों ने धार्मिक समन्वयवाद, मानव–कल्याण के लिए मानवतावाद, जीवन में सच्चरित्रता का आदर्शवाद और स्वानुभूति पर आश्रित सत्य का प्रचार किया।

संतों ने धार्मिक समन्वय का सर्वदा प्रयत्न किया है। संतों के अनुसार हिन्दू–मुसलमान में कोई भेद नहीं है, केवल मन का फेर है संत पलटू दास ने कहा है–

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 9, September 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

साहब एक जहान बनाया दोइ दोइ सब गोहराया हो।
खून पिसाब एक है दोउ एक राह होइ आया हो।
जो हिन्दू वही मुसलमान सब मिलि करे विचारा हो।
पलटू दास दोउ के बीचे साहब एक हमारा हो।
मुसलमान में दोष नहीं है. हिन्दू परम पुनीता।
मुसलमान मुसहब को पढ़ते हिन्दू पढ़ते गीता।
एक कोहार गढ़ा दुई बर्तन दूनी एकै माटी।
पलटू दास बोलता एकै दोई धोखे की टाटी।।[2]

धर्म का मुख्य कार्य समाज में स्थिरता लाना है। इसके अन्तर्गत साधना, उपासना पद्धति, एवं धार्मिक विश्वास आते हैं हिन्दुओं में मूर्तिपूजा, जप, तप, छापा–तिलक और मुसलमानों में हज, नमाज, रोजा इत्यादि पर विश्वास था। परन्तु धीरे–धीरे इन दोनों धर्मों में अंधविश्वास और पाखण्ड का प्रवेश हो गया। धर्म पाश्वभूमि में था, प्रत्यक्ष रूप में जाति–पाँति, ऊंच–नीच, वाह्याडंबर आदि प्रचलित था। इसी के कारण वर्गगत–भेद, द्वेष नफरत आदि का बोलवाला था। ऐसी विषम परिस्थिति में संतों ने धार्मिक समन्वय और सामाजिक सद्भाव कायम करने के लिए जो प्रयास किया है, वह प्रशंसनीय और अनुकरणीय है। इन्हीं कुरीतियों पर प्रहार करते हुए कबीर दास ने मुसलमानों और हिन्दुओं को फटकारते हुए कहा है–

हिन्दू तुरक कहाँ ते आये किन एह राह चलाई।
दिल महि सोच–विचार कवाडे मिस्त दोजख किन पाई।
काजी तै कौन कतेब बखानी।
पढ़त गुनत ऐसे सब मारे किनहु खबर न जानी।
सकति सनेह करि सुन्नति करियै मैं न बदोगा भाई।
जो रे खुदाई मोहि तुरक करेगा आपनही कटि जाई।।
सुन्नति किये तुरक जे होइगा औरत का क्या करिये।
अर्द्ध सरीरी नारि न छोडे ताते हिन्दू ही रहिये।।
छाड़ि कतेब राम भजु बौरे जुलम करत है भारी।
कबीर पकरो टेक राम की तुरक रहे पनि हारी।।[3]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 9, September 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

और कबीरदास ने स्पष्ट कहा है–

हज्ज हमारी गोमती तीर, जहाँ बसहिं पीतंबर पीर।
वाह वाहु क्या खूब गावता है, हरि का नाम मेरे मन भावता है।।
नारद सारद करहिं खवासी, पास बैठी विधी कवला दासी।
कंठे माला जिहवा राम, सहस नाम लै लै करौ सलाम।।
कहत कबीर राम गुन गायौ, हिंदू तुरक दोऊ समझावौ।।[4]

कबीरदास ने मुसलमान और हिन्दू दोनों को समझाते हुए कहा है कि हज, तीर्थाटन आदि हमारे शरीर के भीतर स्थित है। एकाग्रचित्त होकर उसे प्राप्त करने के लिए उस 'राम' का नाम लो तभी तुम्हारा कल्याण हो सकता है। आपसी भेदभाव भूलकर मानवतावादी दृष्टिकोण अपना कर समाज में समरसता स्थापित करो। कबीर के अनुसार वही सच्चा मुल्ला है जो मन से लड़ता है, और गुरु का उपदेश मानकर काल से जूझता है. इस मार्ग पर चल कर जो काल–पुरुष के मान का मर्दन करता है, वही वंदनीय मुल्ला है। वही सच्चा काजी है जो 'काया पर विचारमंथन करता है और काया की अग्नि 'ब्रह्म' पर प्रज्ज्वलित करता है। हिन्दुओं और मुसलमानों की प्रवृत्ति का उल्लेख करते हुए डॉ० रामकुमार वर्मा ने लिखा है कबीर के पहिले भी हिन्दू समाज में कितने ही धार्मिक सुधारक हुए थे पर उनमें अप्रिय सत्य कहने का बल अथवा साहस नहीं था। हिन्दू जन्म से ही अधिक धर्मभीरु होता है। वह उसकी जातीय दुर्बलता है। दूसरों की धार्मिक नीति का स्पष्ट विरोध करना मुस्लिम धर्म का एक विशेष अंग है इन्हीं दोनों परस्पर प्रतिकूल सभ्यताओं के योग से कबीर का उदय हुआ था, जिसका प्रधान उद्देश्य इन दो सरिताओं को एक मुख करना था। कबीर की शिक्षा में हमें हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच की सीमा तोड़ने का यत्न दृष्टिगत होता है। यही उनकी आंतरिक अभिलाषा थी। कबीर की विशेषता इन्हीं धार्मिक पाखण्डों का स्पष्ट शब्दों में विरोध कर सत्यानुमोदन करने की है। कबीर ने निश्चय किया कि हिन्दू–मुस्लिम विरोध का मूल कारण उनका अंधविश्वास है। धर्म का मार्ग संसार के कृत्रिम भेद–भावों से बिल्कुल रहित है– ''कह हिन्दू मोहि राम पियारा, तुरुक कहै रहिमाना। आपस में दोउ लरि लरि मूये मरम न काहू जाना।''[5]

इस प्रकार कबीर ने बिखरे हुए समाज को जोड़न का कार्य किया है। सभी धर्मों के समन्वयात्मक रूप प्रस्तुत करके उन्होंने अपूर्व कार्य किया है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा है कि ''दसरथ सुत

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 9, September 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

तिहुँलोक बखाना, राम नाम कर मरम है। आना।'' 'ब्रह्म' असीम है, वह अवतारी पुरुष नहीं ह, वह सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त है–

तेहि साहब क लागहु साथा, दुइ दुख मेटिके रहहु अनाथा।
दसरथ कुल अवतरि नहिं आया, नहि लंका के राव सताया।
नहीं देवकी के गर्भहि आया नहीं जसोदै गोद खेलाया।
पृथिमी रचन दवन नहि करिया पैठि पताल नहीं बलि छलिया।
नहीं बलिराज के माँडी रारी, नहिं हरिनाकुस बधल पछारी।
होय बराह बरनि नहि धरिया, छत्री मारि निछल न करिया।
नहिं गोवर्धन कर गहि घरिया, नहीं ग्वालन संग बन बन फिरिया।
गण्डक सालिगराम न सीला, मछ कछ होय जल नहि हीला।
द्वारावती सरीर न छाड़ा, लै जगनाथ पिंउ नहिं गाड़ा।
कहै कबीर पुकारि कै, वोहि पथे मति भूल।
जेहि राखेहु अनुमान के सो धूल नही अस्थूल।।[6]

इस प्रकार कबीर दास ने उस निराकार ब्रह्म का वर्णन किया है और सभी लोगो को सचेत करते हुए कहा है कि–

ऊंकार आदि है मूला, राजा प्रजा एकहि सूला।।
हम तुम्ह भी हैं एक लोहू एक प्रांन जीवन है मोहू।।
एक ही बास रहै दस मासा, स्तम पातग एकै आसा।।
एक ही जननी जान्यां संसारा, कौन ग्यान थ भये निनारा।।
ग्यांन न पायौ बावरे, धरी अविद्या मैंड।
सतगुर मिल्या न मुक्ति फल, ताथै खाई बैंड।।

अर्थात् सभी की उत्पत्ति का मूल 'एक' ही है और वही एक सबमें विद्यमान है, परन्तु अज्ञानी मनुष्य नासमझी के कारण अलग–अलग डफली बजा रहा है। सारा संसार अज्ञानता के कारण उस 'ब्रह्म' को समझ नहीं पा रहा है और कृत्रिम पार्थक्य के कारण आपस में भेदभाव, ऊंच–नीच

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 9, September 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

की भावना पाले हुए है। इस प्रकार संतों ने हिन्दू–मुसलमान, ऊंच–नीच के भेदभाव का खण्डन कर समाज में एकता, भाईचारा, समरसता भी भावना जागृत करने का अथक प्रयास किया है।

समन्वय का अभिप्राय है दो या उससे अधिक विभिन्न मतों के बीच एक ऐसी समानता का प्रतिपादन करना होता है, जिसके परिणामस्वरूप उनमें पारस्परिक विरोध समाप्त हो और वास्तविक एकता की सिद्धि प्राप्त हो सके। विक्रम की पन्द्रहवी शताब्दी में भारतवर्ष में इस्लाम और हिन्दू धर्म के बीच संघर्ष चल रहा था। यह धार्मिक मतभेद हिन्दुओं और मुसलमानों की मूल विचार धाराओं तक ही सीमित नहीं था, बल्कि उसके भीतर विभिन्न प्रकार के सम्प्रदायों, मत–मतान्तरों एवं फिरकों की प्रवृत्तियों कार्य कर रहो थीं ये प्रवृत्तियों बड़ी तेजी के साथ फैल रही थी। इनसम्प्रदायों और फिरकों के बीच हिन्दुओं और मुसलमानों के मध्य पाई जाने वाली कटुता तो नहीं थी लेकिन धर्मान्धता की प्रवृत्ति बड़ी तेजी के साथ बढ़ रही थी। उस समय सबसे बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण बात यह थी कि इस कटुता को दूर करने के लिए उस समय कोई गंभीर प्रयास भी नहीं हो रहा था। ऐसी विकट परिस्थिति में संतों ने परमतत्व को समन्वय का आधार मानकर अपना कार्य आरंभ किया। संतों में कबीरदास के पूर्व भी बहुत से संतों और विचारकों ने इस पर विचार किया था, परन्तु कबीर की भाँति मुक्त कण्ठ से किसी ने इसका विरोध नहीं किया था कबीर ने तत्व की बात समझने और समझाने का प्रयास किया और समन्वय पर मनन किया। कबीर ने राम रहीम, केशव, करीम, अल्लाह आदि विभिन्न नामों के चक्कर में न पड़कर उन सबके मूल में स्थित सत्य पर बल दिया और स्पष्ट किया कि 'उसके वास्तविक रहस्य को बिना समझे ही व्यर्थ में एक दूसरे के विरोधी बने हुए हैं। यह नासमझी ही सभी झगड़ों के मूल में है।

निष्कर्ष –

अन्त में निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैकि संतो ने समन्वय की निषेधात्मक पद्धति को ग्रहण किया। उन्होंने एक तरफ एकत्व एवं अविरोध की बात की तो दूसरी तरफ हिन्दुओं के अवतारवाद तथा हिन्दुओं और मुसलमानों के समस्त वाह्याडंबर का विरोध किया। उन्होंने वाह्याचारों का विरोध केवल विरोध के लिए नहीं किया। उन्होंने कट्टरपन और कठमुल्लापन का विरोध कर दोनों को एक दूसरे के निकट लाने का प्रयास किया।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 9, September 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सन्दर्भ

1. पलटू दास की बानी भाग 1, पृ0–74.
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास– डॉ० विजयेन्द्र स्नातक, पृ0–44.
3. पलटू शब्दावली, पृ0–184,281.
4. कबीर ग्रंथावली, परिशिष्ट पद पृ0–220.
5. कबीर ग्रंथावली, परिशिष्ट पद पृ0–215.